ISSN No. 2349-4654
नाद – नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 1, अंक : 1, नवम्बर 2014

घराना तथा संस्थागत शिक्षा प्रणाली : एक समीक्षात्मक दृष्टिकोण

गंगा तमांग

शोध छात्रा, संगीत विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सार-संक्षेप

वर्तमान समय में संगीत शिक्षण की तीन विधियाँ प्रचलित हैं। घराना परम्परा, संस्थागत प्रणाली, दूरस्थ शिक्षण प्रणाली। इन तीनों में प्रथम दो अत्यधिक प्रचलित हैं। भारत में संगीत की दूरस्थ शिक्षण पद्धति अभी नवीन है और इसका प्रचार अधिक नहीं हुआ है। घराना शब्द की उत्पत्ति 'घर' शब्द से मानी जाती है। संगीत में घराना शब्द का प्रयोग वंश परम्परा अथवा गुरु शिष्य परम्परा के रूप में किया जाता है। आरंभ में संगीत का घरानों के रूप में विकसित होना संगीत की विशिष्टताओं को सुरक्षित रखने का कारण थी, परन्तु घरानों की संकुचित मनोवृत्तियों के फलस्वरूप संगीत की शिक्षा कुछ विशेष व्यक्तियों के लिए ही रह गई। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक आते-आते संगीत के क्षेत्र में नवीन चेतना की लहर जाग्रत हुई। पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर तथा पं. विष्णु नारायण भातखण्डे जी के प्रयत्नों के फलस्वरूप संपूर्ण उत्तर भारत में संगीत की शिक्षण संस्थाओं का जाल फैल गया। इन दो विद्वानों के फलस्वरूप ही संगीत विषय को एच्छिक रूप से पाठ्यक्रम में शामिल किया गया। जो इस शोध पत्र का विषय है, घराना तथा संस्थागत शिक्षा प्रणाली के गुण व दोष का वर्णन आगे मैं इस शोध पत्र में करूँगी।

शोध-पत्र

प्राचीन काल में गुरूकुल एवं आश्रमों में विद्यार्थियों को अन्य विषयों के साथ साथ संगीत की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी। उस समय गुरू शिष्य परम्परा के अंतर्गत ही शिक्षा दी जाती थी। उस पद्धति में विद्यार्थी गुरू के पास रहकर गुरू सेवा करते हुए गुरूमुख से सीखें और सुने हुए का ध्यान पूर्वक अनुकरण करने का प्रयास करते थे गुरू के समक्ष उपस्थित रहकर ही सीखे गये का अभ्यास किए जाने से उसमें आवश्यकतानुसार सुधार होता रहता था, यह पद्धति भारतीय शास्त्रीय संगीत साधना के लिए प्रभावी एवं महत्त्वपूर्ण रही है।

धीरे-धीरे समय परिवर्तन के कारण इस परम्परा में भी थोड़ा परिवर्तन आया, आगे चल कर इस परम्परा को घराना नाम दिया गया। इस परम्परा में शिष्य बचपन से ही गुरू के घर जाकर रहते थे व संगीत की शिक्षा ग्रहण करते थे। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप संगीत की गायकी का लेन देन बढ़ता चला गया। घराना परम्परा का उद्गम स्थान गुरू शिष्य प्रणाली को ही माना जाता है। जब संगीतकार या कलाकार अपने चुनिंदा शिष्यों को दीर्घ समय तक सिखाते हैं तो आगे चलकर यही परम्परा घराना परम्परा बन जाती है।

''घराना शब्द की उत्पत्ति 'घर' शब्द से मानी जाती है।''[1] घराना शब्द हिन्दी भाषा के 'घर' शब्द से बना है जिसका अर्थ वंश या परिवार है। ''एक वंश परम्परा जिसमें अपने परिवार की समस्त विशेषताएँ अर्थात् रीति, पद्धति, स्टाइल जिसकी प्रत्येक इकाई में उसके नियम एवं उसके प्रतिस्थापक की छाप लगी हो घराना कहलाती है। संस्कृत का यह वाक्य सारगर्भित है। 'वंशों द्विविधा जन्मना विधाया च।' अर्थात् वंश व कुल दो प्रकार से चलता है। एक जन्म से दूसरा विद्या से, जिस प्रकार से एक परिवार में जन्में सभी व्यक्तियों का समूह एक परिवार या घराना होता है उसी प्रकार एक गुरू से विद्या प्राप्त करने वाले सभी शिष्यों का समूह एक परिवार या घराना होता है।''[2] इस घराना परम्पराओं से जुड़े शिष्यों तथा वंशजों ने अपने घरानों की विशेषताओं को हमेशा आगे बढ़ाने का प्रयास किया।

संस्थागत शिक्षा प्रणाली :

वैदिक युग में संगीत मुख्य रूप से धर्म से जुड़ा रहा मध्यकाल में मुगलों के आगमन के बाद शास्त्रीय संगीत तथा संगीतज्ञों को विभिन्न रियासतों में आश्रय प्राप्त हुआ। अंग्रेजों के शासन काल में जब रियासतें समाप्त होने लगी तो राजाश्रय मिलना बंद हो गया स्वतन्त्रता के पश्चात तो यह सुविधा बिल्कुल ही समाप्त हो गई। कलाकारों के लिए जीवन यापन की समस्या मुँह बाए खड़ी थी। रियासतों से संगीत निकलकर अब समाज का अंग बनने को आतुर थी। संगीत का उपयोग कला रूप में ही नहीं वरन् मनोरंजन के रूप में भी होने लगा, वर्षों की बंदिशों से मुक्त होकर संगीत जनमानस पर छाने लगा जो संगीत कभी जनता से कोसों दूर था, उसे सामान्य जनता में लाने का प्रयास प्रारंभ हुआ और यह कार्य सर्व प्रथम पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर तथा पं. विष्णु नारायण भातखण्डे जी ने ही किया जिनके कार्यों के परिणामस्वरूप संगीत को सम्मान का स्थान फिर से प्राप्त हुआ। दोनों ही महानुभावों ने देश में जगह-जगह अनेक संगीत विद्यालयों की स्थापना की। संगीत विषय सभी को सुलभ हो सके इस हेतु संगीत विषय को अन्य विषयों की तरह पाठ्यक्रम में शामिल किया गया। कुछ समय पूर्व में यह धारणा थी कि विश्वविद्यालयी शिक्षा पूर्ण रूप से परम्परा से जुड़ी हुई है। परन्तु आज सभी जानते हैं कि यह शिक्षा मात्र संगीत के सामान्य ज्ञान को अर्जित करने हेतु दी जाती है। आगे मैं दोनों शिक्षा प्रणाली के गुण दोषों का वर्णन करूंगी जो निम्न हैं—

घराना शिक्षा प्रणाली के गुण तथा दोष :

1. घरानेदार शिक्षा पद्धति में गुरू को सुयोग्य शिष्य चुनने का तथा शिष्य को अपना गुरू चुनने की स्वतंत्रता थी। गुरू ऐसे शिष्यों का चयन करते थे जो बहुमुखी प्रतिभा का धनी हो, लगन, सेवा, प्रेम तथा विषय में हार्दिक अभिरुचि रखता हो।
2. गुरू अपने शिष्य को संगीत की शिक्षा नि:शुल्क प्रदान करता था जिससे शिष्य को आर्थिक समस्या का सामना नहीं करना पड़ता था। शिक्षा के पूर्ण होने पर शिष्य अपनी इच्छा के अनुसार गुरू दक्षिणा, अपने गुरू को प्रदान करता था।
3. इस परम्परा में प्रतिभाशाली शिष्य को गुरू के साथ अपनी कला का प्रदर्शन करने का अवसर भी मिल जाता था।
4. वर्षों तक गुरूकुल में रहने के कारण शिष्य स्वत: ही अनुशासित, मर्यादित तथा संस्कारवान बन जाता था।

घरानेदार शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी को आज भी संगीत जगत में सम्मान व विशेष आदर के साथ देखा जाता है परन्तु इतना सब होने के बाद भी घरानेदार शिक्षा पद्धति अब लुप्त सी होता जा रही है। इसका क्या कारण है? इस पद्धति में कुछ गुण हैं तो कुछ दोष भी हैं जो इस पद्धति के लिए प्रश्न चिन्ह बने हुए हैं।

1. घरानेदार शिक्षा पद्धति में सामान्य विद्यार्थियों को (जो संगीत में रूचि रखते हैं) प्रवेश नहीं मिल सकता क्योंकि इस प्रणाली में सिर्फ गुरू के वंशज या अत्यन्त प्रभावशाली एवं गुणवान व्यक्ति का चयन ही होता है।
2. इस परम्परा में गुणवत्ता तो समृद्ध होती है परन्तु इस का प्रचार-प्रसार कम होता है।
3. कोई निश्चित पाठ्यक्रम अथवा समयावधि नहीं होती थी।
4. गुरू के प्रति अंध श्रद्धा अंध भक्ति का बोलबाला बहुत होता था इसलिए अंधानुकरण की प्रवृत्ति इस परम्परा में सबसे अधिक दिखाई देती है।
5. इन घरानों में प्राय: पुत्र और दामाद को तो संपूर्ण शिक्षा दी जाती थी, लेकिन सामान्य शिष्यों को (जिनके साथ रक्त संबंध नहीं था) कई बार शिक्षा की बारीकियों से वंचित रखा जाता था।
6. घराना शिक्षा में गंडा बांध परम्परा होती थी। विद्यार्थी अपने गुरू की अनुमति के बिना न ही अपनी कला का प्रदर्शन कर सकता था, और न ही उसे किसी अन्य कलाकार को सुनने की अनुमति प्रदान की जाती थी। जिसके कारण शिष्य को यह ज्ञान ही नहीं हो पाता कि संगीत की यह शिक्षा ठीक से दी जा रही है या नहीं।
7. इस पद्धति में सृजनात्मक शक्ति का अभाव है शिष्य बिल्कुल लकीर के फकीर बने रहते हैं।
8. हमेशा से ही घरानों में आपसी द्वेष दिखाई दिया। एक घराने का व्यक्ति दूसरे घराने के व्यक्ति का संगीत सुन सकता था।

संस्थागत शिक्षा प्रणाली के गुण-दोष :

1. संगीत विषय को अन्य विषयों की तरह शामिल किए जाने से सभी संगीत प्रेमी विद्यार्थियों के लिए इसकी शिक्षा लेना सुलभ हो गया।
2. संगीत की संस्थागत शिक्षा पद्धति में एक लाभ अवश्य हुआ, इस पद्धति ने तानसेन की जगह कानसेन अधिक पैदा किए, इस पद्धति के द्वारा श्रोताओं की संख्या में वृद्धि हुई।
3. संस्थाओं में संगीत विषय आने से रोजगार में वृद्धि हुई।
4. इस प्रणाली में हर वर्ग का विद्यार्थी आधुनिक शिक्षा पद्धति के नये आयामों से अपनी कला को उत्कृष्टि कर आगे बढ़ा सकता है।
5. संगीत की इस पद्धति ने किसी भी वर्ग के व्यक्ति, गरीब वर्ग से लेकर धनाढ्य व्यक्ति को भी संगीत शिक्षा के लिए किसी का मोहताज नहीं किया।
6. समय-समय पर होने वाली संगीत संगोष्ठियों ने व पत्र-पत्रिकाओं ने भी संगीत जगत में हो रहे परिवर्तन को समाज में व सामान्य वर्ग तक प्रसारित किया।

एक ओर जहाँ का शास्त्रीय पक्ष काफी प्रबल रहा वही दूसरी ओर क्रियात्मक पक्ष में तीव्रता के साथ ह्रास हुआ। घराना परम्परा में घंटों-घंटों रियाज किया जाता था वही उसके विपरीत संस्थागत परम्परा में रियाज का अभाव देखा गया। घराना संगीत परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए नहीं प्रत्युत स्वन्त: सुखाय था किन्तु विद्यालयीन संगीत का उद्देश्य बड़ा ही पतित होता जा रहा है। इसके भी कई दोष हैं—

1. विद्यार्थियों का गुणात्मक दृष्टिकोण से परखे बिना ही प्रवेश दे दिया जाना।
2. इस प्रणाली में समय का अभाव होना।
3. कई विद्यार्थियों को एक साथ सिखाना।
4. संस्थाओं में संगतकर्ता का अभाव होना, जिस कारण विद्यार्थियों का ताल पक्ष कमजोर हो जाता है।
5. गुरू शिष्य के बीच आपसी समझ, प्रेम मर्यादा का अभाव होना।
6. परीक्षा प्रणाली का दूषित होना, आलाप तानों को रटने का प्रचलन, गुरूओं द्वारा मनमानी दक्षिणा लेना यह सब संस्थागत शिक्षा प्रणाली के दोष है।
7. इस प्रणाली में गुरू को शिष्य तथा शिष्य को गुरू चुनने की स्वतंत्रता नहीं है।
8. पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के लिए निश्चित समयावधि का होना।
9. ''संगीत शिक्षक भी आज अपना कार्य पूर्ण निष्ठा से नहीं कर रहे हैं, क्योंकि उनके सामने संगीत शिक्षा ही केवल एक उद्देश्य नहीं

है वरन् अन्य सामाजिक दायित्व भी है, जो उन्हें पूरे करने होते हैं। इसलिए आज के गुरू अपने उद्देश्य के प्रति उतने सजग नहीं है, जितने पूर्व परम्परा में थे।'' [3]

सुझाव तथा निष्कर्ष :

आधुनिक समय में घराना शिक्षा परम्परा लगभग विलुप्त हो गई है तथा संस्थागत शिक्षा प्रणाली प्रचलन में है इस प्रणाली को जीवंत बनाने हेतु मेरे द्वारा कुछ विचार तथा सुझाव प्रस्तुत हैं। पाठ्यक्रम में रागों की संख्या कम रखी जाए तथा उनमें रागों की बारीकियों से छात्रों को अवगत करवाया जाए। पाठ्यक्रम को जो राग हैं उन रागों को, शीर्षस्थ कलाकारों के गाए गए केसेट्स के माध्यम से विद्यार्थियों को नियमित रूप से सुनाया जाना चाहिए। बड़े-बड़े कलाकारों को बुलाकर संगीत की वर्कशॉप का आयोजन किया जाना चाहिए। संगीत शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाने के लिए कुछ प्रोफेशनल कोर्स चलाए जा सकते हैं, जैसे संगीत रचनाकार, निर्देशक, वीडियो, निर्माता समीक्षात्मक अध्ययन, वाद्य निर्माण आदि ऐसे पाठ्यक्रमों का समावेश हो जो युवा वर्ग की सोच, दृष्टिकोण एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखे जिससे उनका रूझान इस तरफ बढ़े। संगीत शिक्षा का उद्देश्य किसी बालक को मात्र कलाकार बनाना ही नहीं बल्कि संगीत के माध्यम से उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना होता है।

घराना तथा संस्थागत शिक्षा प्रणाली के गुण दोषों के अध्ययन के पश्चात यह निष्कर्ष निकलता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में यदि घराने का बीज बो दिया जाए तो हमारा आधुनिक संगीत निश्चय ही ऊँचाइयों को छू सकेगा। आज की शिक्षा प्रणाली में शिक्षण परम्परा की सीमाओं का अनुभव करते हुए यदि इसमें पूर्ण शिक्षण परम्परा का समायोजन हो सके तो अच्छे परिणाम मिल सकते हैं।

पाद-टिप्पणियाँ

1. कुमार, अशोक 'यमन', संगीत रत्नावली, पृ.सं. 486
2. पलनीटकर अलकनंदा, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, शास्त्रीय संगीत शिक्षा : समस्याएँ एवं समाधान, लेख-संगीत शिक्षण और घराना, पृ.सं. 121
3. सेठी, ज्योति, संगीत, नवम्बर, 1990, पृ.सं. 5

संदर्भ ग्रंथ सूची

पलनीटकर अलकनंदा, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, शास्त्रीय संगीत शिक्षा : समस्याएँ एवं समाधान, प्रकाशक-आदित्य पब्लिशर्स, बीना, मध्यप्रदेश, संस्करण, 2000

मासिक पत्रिका, संगीत शिक्षण और घराना, नवम्बर, 1990

कुमार, अशोक 'यमन', संगीत रत्नावली, प्रकाशक-अभिषेक पब्लिकेशंस, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण, 2008

त्रिवेदी, राजीव भारतीय शास्त्रीय संगीत : शास्त्र, शिक्षण व प्रयोग, लेख-संगीत अध्ययन में प्रौद्योगिकी का स्थान, प्रकाशक-साहित्य संगम, नया 100, लूकरगंज, इलाहाबाद, संस्करण, 2008